Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP - PSC

राज्य सिविल सेवा

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 7

भारत की अर्थव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

भारत की अर्थव्यवस्था

क्र.स.	अध्याय	पेज स.
1.	**राष्ट्रीय आय** ● राष्ट्रीय आय के पहलू ● राष्ट्रीय आय की गणना के तरीके ● आर्थिक सांख्यिकी संबंधी स्थायी समिति	1
2.	**मुद्रास्फीति और आर्थिक सुधार** ● मुद्रास्फीति के प्रकार ● WPI बनाम CPI कोर ● उत्पादक मूल्य सूचकांक ● आवास मूल्य सूचकांक ● सेवा मूल्य सूचकांक (SPPI) ● मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण ● बेस इफेक्ट ● मुद्रास्फीति के प्रभाव ● आर्थिक सुधार	7
3.	**भारत में बैंकिंग** ● भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) और उसके कार्य ● वाणिज्यिक बैंक और उनके कार्य ● गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थान (NBFC) ● बैंकिंग क्षेत्र में सुधार ● नॉन परफॉर्मिंग एसेट्स (एनपीए) और स्ट्रेस्ड एसेट्स ● दिवाला और दिवालियापन ● सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में सुधार के लिए मिशन इंद्रधनुष	18

4.	**वित्तीय समावेशन** ● वित्तीय समावेशन की आवश्यकता ● भारत में वित्तीय समावेशन की चुनौतियां ● सरकारी उपाय ● डिजिटल वित्तीय समावेश (DFI) ● चुनौतियाँ ● भारत में की गई डिजिटल वित्तीय समावेशन पहल	42
5.	**मौद्रिक नीति** ● मात्रात्मक उपकरण ● गुणात्मक उपकरण ● मौद्रिक नीति समिति	47
6.	**कराधान** ● अच्छे कराधान की विशेषताएं ● प्रत्यक्ष कर ● अप्रत्यक्ष कर ● वस्तु एवं सेवा कर ● प्रत्यक्ष कर सुधार ● केंद्र से राज्यों को फंड ट्रांसफर ● अंतर्राष्ट्रीय कर संधियाँ	54
7.	**सब्सिडी** ● सब्सिडी का वर्गीकरण ● प्रत्यक्ष सब्सिडी ● अप्रत्यक्ष कृषि सब्सिडी ● कृषि सब्सिडी के लाभ और मुद्दे ● वितरण के विभिन्न तरीके ● भारतीय खाद्य निगम (FCI) ● राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 ● विश्व व्यापार संगठन और कृषि सब्सिडी	73

8.	**भारतीय सार्वजनिक वित्त** ● सार्वजनिक राजस्व ● सरकारी व्यय ● सार्वजनिक ऋण ● राजकोषीय नीति ● घाटे और प्रकार ● राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करने के उपाय ● सार्वजनिक ऋण ● राज्य वित्त ● बजट	79
9.	**कृषि क्षेत्र** ● भारत में कृषि क्षेत्र की स्थिति ● पंचवर्षीय योजनाओं के तहत कृषि का विकास ● कृषि और हरित क्रांति ● कृषि विपणन ● सार्वजनिक वितरण प्रणाली ● इनपुट प्रबंधन योजनाएं/मिशन ● जल प्रबंधन-सूक्ष्म सिंचाई ● त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम ● कृषि ऋण ● खाद्य सुरक्षा ● उत्पादन प्रबंधन योजनाएं ● मूल्य स्थिरीकरण के उपाय ● कृषि में विस्तार प्रबंधन ● कृषि विस्तार के लिए जनसंचार माध्यमों का समर्थन ● संबद्ध गतिविधियों का प्रबंधन-अतिरिक्त आय उत्पन्न करना ● कृषि क्षेत्र से संबंधित विभिन्न योजनाएं	90

10.	**भारत में उद्योग और सेवा क्षेत्र** ● भारत में प्रमुख उद्योग ● भारत में प्रमुख आयात और निर्यात ● औद्योगिक विकास संस्थान ● भारत में औद्योगिक क्षेत्र से संबंधित प्रमुख समस्याएं ● औद्योगिक क्षेत्र से संबंधित सरकारी पहल ● भारत में सेवा क्षेत्र की स्थिति ● भारत में सेवा क्षेत्र से संबंधित प्रमुख मुद्दे ● सेवा क्षेत्र से संबंधित सरकारी पहल	121
11.	**गरीबी** ● गरीबी के प्रकार ● भारत में गरीबी का अनुमान ● गरीबी के आकलन के लिए समितियां ● भारत में गरीबी के कारण ● गरीबी का जाल ● भारत में गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम ● बहुआयामी गरीबी सूचकांक	143
12.	**बेरोजगारी** ● भारत में बेरोज़गारी का पैमाना ● भारत में बेरोजगारी के प्रकार ● भारत में बेरोजगारी के कारण ● बेरोजगारी के प्रभाव ● सरकारी पहल	149
13.	**बाहरी क्षेत्र और भुगतान संतुलन** ● महत्वपूर्ण परिभाषाएं ● भुगतान संतुलन ● विशेष आर्थिक क्षेत्र ● GAAR-जनरल एंटी अवॉइडेंस रूल्स ● विदेशी निवेश ● बाह्य वाणिज्यिक उधार (ECB)	155

	• व्यापार संवर्धन • निर्यात प्रोत्साहन योजनाएं • BIPA & BIT • भारत द्वारा RTA • नई विदेश व्यापार नीति • दो देशों के बीच मुद्रा विनिमय समझौता • रणनीतिक विनिवेश • विदेशी निवेश साधन • विदेशी मुद्रा भंडार • विदेशी मुद्रा दर प्रणाली • मुद्रा परिवर्तनीयता • विदेशी कर्ज • विदेशी मुद्रा बाजार • व्यापार संतुलन	
14.	**अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थान** • अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष • विश्व बैंक • एशियाई विकास बैंक • विश्व व्यापार संगठन • आसियन • सार्क • NAFTA • OECD	**174**

1 CHAPTER

राष्ट्रीय आय

- **राष्ट्रीय आय:** मूल्यह्रास को समायोजित करने के बाद, एक लेखा वर्ष के दौरान सामान्य निवासियों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य।
    - यह कारक लागत (FC) पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP) है।
    - इसमें कर, मूल्यह्रास और गैर-कारक इनपुट (कच्चा माल) शामिल नहीं है।
- देश की प्रगति के निर्धारण में भी उपयोगी है।
- इसमें निहित हैं: मजदूरी, ब्याज, किराया और उत्पादन के घटकों द्वारा प्राप्त लाभ जैसे: श्रम, पूंजी, भूमि और उद्यमिता।
- **घरेलू आय**: मूल्यह्रास को समायोजित करने के बाद, एक लेखा वर्ष के दौरान घरेलू क्षेत्र के भीतर उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य।
    - यह कारक लागत पर एनडीपी(NDP) है।
- एनएनपी(NNP) और एनडीपी(NDP) दोनों को स्थिर कीमतों (वास्तविक आय) या बाजार मूल्य (नाममात्र आय) पर मापा जा सकता है।
- **राष्ट्रीय आय:** घरेलू आय + एनएफआईए

कुछ महत्वपूर्ण शर्तें	
कारक लागत(FC)	• किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन में उपभोग या उपयोग किए गए उत्पादन के सभी कारकों की कुल लागत।
मूल क़ीमत(BP)	• जब किसी सेवा या वस्तु के उत्पादन के कारक लागत में उत्पादन प्रक्रिया के दौरान लगाए जाने वाले सभी करों को जोड़कर उसमें से उत्पादन प्रक्रिया के दौरान दी जाने वाली सभी सब्सिडियों को घटाया जाता है तब प्राप्त मूल्य मूल कीमत कहलाता है। • मूल कीमत(BP)= कारक लागत(FC)+ उत्पादन कर(PT) - उत्पादन सब्सिडी(PS)
बाजार मूल्य(MP)	• जिस कीमत पर कोई वस्तु बाजार में बेची जाती है। इसमें मजदूरी, किराया, ब्याज, इनपुट मूल्य, लाभ और उत्पादन की अन्य लागतें निहित हैं। • सरकार द्वारा लगाए गए कर और सरकार द्वारा प्रदान की गई उत्पादन सब्सिडी भी निहित है। • बाज़ार मूल्य(MP)= मूल कीमत(BP)+ उत्पाद कर(PT) - उत्पाद सब्सिडी(PS) या बाज़ार मूल्य(MP)= कारक लागत(FC)+ शुद्ध अप्रत्यक्ष कर(NIT)
मूल्यह्रास	• मूल्यह्रास का अर्थ पूंजीगत संपत्ति के मूल्य में समय के अनुसार आने वाली कमी से है। मूल्यह्रास के लिए विभिन्न कारक जिम्मेदार होते हैं। जैसे- ○ सम्पत्ति का पुराना हो जाना (मशीनरी/फर्नीचर) ○ उसका प्रचलन से बाहर हो जाना ○ तकनीकी में बदलाव आना / अपग्रेड होना
स्थानान्तरण भुगतान	• एक मौद्रिक भुगतान जिसके लिए कोई वस्तुओं या सेवाओं का आदान-प्रदान नहीं किया जाता है। • स्थानीय, राज्य और संघीय सरकारों द्वारा जरूरतमंद व्यक्तियों को धन के पुनर्वितरण के प्रयासों को आमतौर पर हस्तांतरण भुगतान के रूप में संदर्भित किया जाता है। • सामाजिक सुरक्षा और बेरोजगारी बीमा जैसे हस्तांतरण भुगतान संयुक्त राज्य अमेरिका में

	लोकप्रिय हैं। ● स्थानांतरण भुगतान का उपयोग आमतौर पर कॉर्पोरेट, राहत पैकेज और सब्सिडी का वर्णन करने के लिए नहीं किया जाता है।

राष्ट्रीय आय के पहलू

सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी)

- किसी देश में एक वित्तीय वर्ष में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य।
- आर्थिक संकेतक किसी देश के आर्थिक विकास को मापने के लिए प्रयोग किया जाता है।
- नियमित अवधियों पर अनुमानित (जैसे- त्रैमासिक / वार्षिक)
  - भारत में वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च तक माना जाता है।
- सकल घरेलू उत्पाद की गणना के लिए उत्पादन क्षेत्र में शामिल हैं-
  - किसी देश की भौगोलिक सीमाएँ जिसमें उसके विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (EEZ) शामिल हैं। (200 समुद्री मील या 360 किलोमीटर तक)
  - विभिन्न देशों में एक देश का दूतावास
  - वाहन जैसे जहाज, विमान आदि जिस देश में पंजीकृतहोते हैं, वे उस देश की घरेलू सीमा के अंतर्गत माने जाते हैं।
- उत्पाद में निहित हैं: देश के घरेलू क्षेत्र में सामान्य निवासियों और अनिवासियों द्वारा उत्पादित सभी अंतिम वस्तुएँ और सेवाएँ।
  - विदेश से शुद्ध कारक आय (NFIA) शामिल नहीं है।
- केंद्रीय सांख्यिकी संगठन, सांख्यिकी और कार्यक्रम मंत्रालय द्वारा गणना की जाती है।
- 'मात्रात्मक अवधारणा' और अर्थव्यवस्था की आंतरिक ताकत को इंगित करता है।
- आईएमएफ और विश्व बैंक द्वारा सदस्य की अर्थव्यवस्थाओं के तुलनात्मक विश्लेषण में उपयोग किया जाता है।

जीडीपी = खपत + निवेश + सरकारी खर्च + निर्यात - आयात

सकल घरेलू उत्पाद की गणना के लिए तरीके:

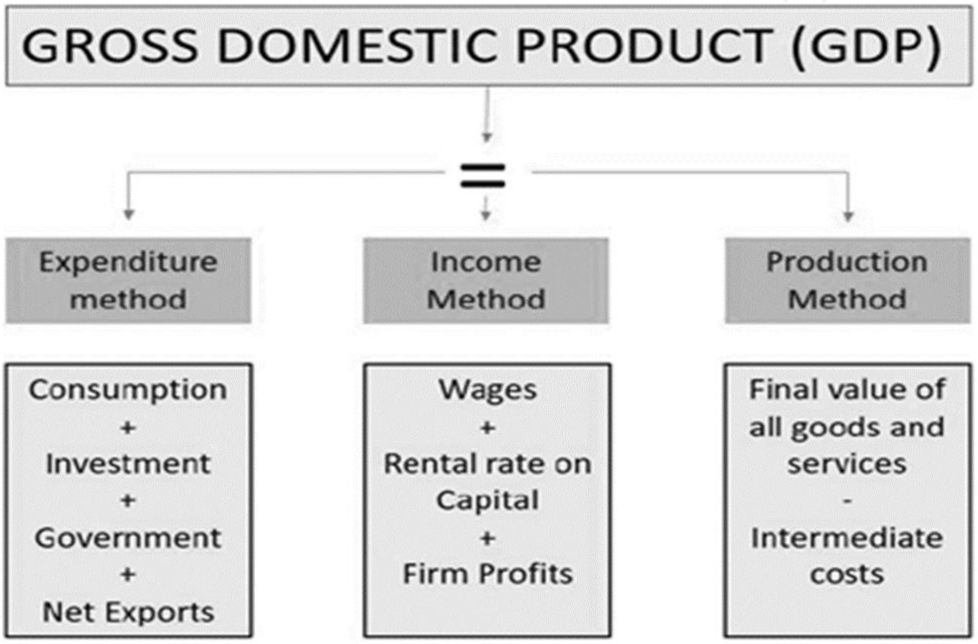

सांकेतिक जीडीपी	वास्तविक जीडीपी
• देश के भीतर उत्पादित कुल वित्तीय व्यवसाय मूल्य। • मुद्रास्फीति के बिना समायोजित। • चालू वर्ष की कीमतों पर। • उच्च मूल्य • एक वर्ष की तिमाहियों की तुलना करता है। **सांकेतिक सकल घरेलू उत्पाद = चालू वर्ष में उत्पादन ✖ चालू वर्ष में मूल्य** • अर्थव्यवस्था के वास्तविक प्रदर्शन को नहीं दर्शाता है।	• जीडीपी मीट्रिक समायोजित : सामान्य मूल्य स्तर में परिवर्तन के साथ। • मुद्रास्फीति से समायोजित • नियमित कीमतों पर • कम मूल्य • दो या दो से अधिक वित्तीय वर्ष की तुलना करता है। **वास्तविक जीडीपी = चालू वर्ष में उत्पादन ✖ आधार वर्ष मूल्य** • केवल वस्तुओं और सेवाओं के वास्तविक उत्पादन में परिवर्तन के आँकड़े सम्मिलित किये जाते हैं।

जीडीपी अपस्फीतिकारक(GDP Deflator)

- उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में परिवर्तन का मापन करता है।
- मुद्रास्फिति माप संकेतक है जो CPI सूचकांक की तुलना में अधिक व्यापक है।

जीडीपी डिफ्लेटर =सांकेतिक जीडीपी / वास्तविक जीडीपी

जीडीपी विकास दर:

- मापता है कि अर्थव्यवस्था कितनी तेजी से बढ़ रही है।
- जीडीपी में लगातार दो वर्षों या तिमाहियों में परिवर्तन को मापता है।

सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर = 100 x [(जीडीपी चालू वर्ष/तिमाही – जीडीपी पिछला वर्ष/तिमाही)/जीडीपी पिछला वर्ष/तिमाही]

- वास्तविक आर्थिक विकास दर क्रय शक्ति को ध्यान में रखती है और इसमें मुद्रास्फीति-समायोजित होती है।

कारक लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपीएफसी)

- कारक लागत एक वस्तु के उत्पादन की लागत है। इसमें भूमि, श्रम, पूँजी और उत्पादक के मुनाफे की लागत शामिल होती है।

बाजार मूल्य पर जीडीपी (GDPMP)

- बाजार मूल्य में साधन लागत के साथ शुद्ध अप्रत्यक्ष कर शामिल होते हैं। (शुद्ध अप्रत्यक्ष कर कुल अप्रत्यक्ष कर और सब्सिडी के बीच का अंतर)

GDPMP = GDPFC + अप्रत्यक्ष कर - सब्सिडी

सकल मूल्य वर्धित(GVA)

- इसमें GDP की गणना बाज़ार मूल्य पर की जाती है, जिसमें उत्पादन के विभिन्न चरणोंको शामिल किया जाता है।
- इसमें दोहरी गणना से बचने के लिए अंतिम वस्तुओं के आधार पर गणना की जाती है।

GVA = GDP + सब्सिडी - कर

शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP)

- किसी देश की भौगोलिक सीमाओं के अंदर सृजित सभी वस्तुओं और सेवाओं की कुल संपत्ति।
- राष्ट्रीय पूंजी परिसंपत्तियों जैसे मशीनरी, घरों और कारों के मूल्यह्रास का मूल्य एनडीपी की गणना के लिए जीडीपी से घटाया जाता है।
- अन्य कारण: परिसंपत्ति का अप्रचलन और पूर्ण विनाश को भी एनडीपी द्वारा ध्यान में रखा जाता है।

शुद्ध घरेलू उत्पाद(NDP) =सकल घरेलू उत्पाद(GDP) –मूल्यह्रास.

- **महत्व**
  - अर्थव्यवस्था को मूल्यह्रास के कारण हुए नुकसान की ऐतिहासिक स्थिति को समझना।
  - तुलनात्मक अवधि में उद्योग और व्यापार में मूल्यह्रास की क्षेत्रीय स्थिति को समझना और विश्लेषण करना।
  - आर और डी के क्षेत्र में अर्थव्यवस्था की उपलब्धियों का प्रदर्शन करता है, जिन्होंने ऐतिहासिक समय अवधि में मूल्यह्रास के स्तर को ठीक करने का प्रयास किया है।

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)

- किसी देश में नागरिकों और उद्यमों द्वारा उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य, चाहे वे कहीं भी उत्पादित हों।
- यह विदेशों से अपनी आय के साथ जोड़ा गया देश का सकल घरेलू उत्पाद है।
- 'विदेश से आय' में निम्नलिखित शामिल हैं :
  - व्यापार संतुलन: किसी देश के कुल निर्यात और आयात का वर्ष के अंत में शुद्ध परिणाम।
  - बाहरी ऋणों पर ब्याज: देश द्वारा उधार दिए गए धन पर ब्याज की शेष राशि और उस धन पर ब्याज जो उसने अन्य देशों से उधार लिया है।
    - भारत हमेशा विश्व अर्थव्यवस्थाओं का एक 'शुद्ध ऋणी' रहा है।
  - निजी प्रेषण: विदेशों में काम कर रहे भारतीयों (भारत में) और भारत में काम कर रहे विदेशी नागरिकों (अपने गृह देशों में) द्वारा 'निजी हस्तांतरण' का खाता।

GNP(Y) =उपभोग व्यय (सी) + निवेश (आई) + सरकारी व्यय (जी) + शुद्ध निर्यात (एक्स) + विदेश से शुद्ध आय (Z).

- **Y = C + I + G + X + Z**

- जीएनपी के कारक: उपकरण, मशीनरी, कृषि उत्पादों और करों और कुछ सेवाओं जैसे परामर्श, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल जैसी वस्तुओं का निर्माण।
- सेवाओं को वितरित करने की लागत की गणना नहीं की जाती है।
- जब कोई नागरिक दोहरी नागरिकता रखता है तो प्रति व्यक्ति जीएनपी का उपयोग देश-दर-देश के आधार पर जीएनपी की गणना के लिए किया जाता है।
- उस स्थिति में, उनकी आय को प्रत्येक देश के सकल घरेलू उत्पाद के रूप में दो बार गिना जाता है।

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)

- सकल राष्ट्रीय उत्पाद से मूल्यह्रास को हटाकर प्राप्त मूल्य NNP कहलाता है।
- यह निर्धारित करता है कि एक देश एक विशिष्ट समय अवधि में कितना उपभोग कर सकता है।

NNP = GNP –मूल्यह्रास
or
NNP = GDP + विदेशों से आय - मूल्यह्रास

- जब किसी देश का शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP) गिरता है,
  - व्यवसाय उन उद्योगों में स्थानांतरित होने पर विचार करते हैं जिन्हें मंदी-अभेद्य माना जाता है।

निजी आय(PI)	• किसी देश के नागरिकों द्वारा सामूहिक रूप से अर्जित की गई धन राशि। • जैसे रोजगार से प्राप्त धन, निवेश द्वारा भुगतान लाभांश और वितरण, संपत्ति के स्वामित्व से प्राप्त किराया, और उद्यमों से लाभ साझा करना। • अधिकांश मामलों में व्यक्तिगत आय पर कराधान लगाया जाता है। **PI = राष्ट्रीय आय – अविभाजित लाभ– परिवारों द्वारा प्रदत्त शुद्ध ब्याज – कॉर्पोरेट टैक्स + सरकार और फर्मों से परिवारों को भुगतान हस्तांतरण**
व्यक्तिगत प्रयोज्य आय(PDI)	• परिवारों के लिए उपलब्ध आय जिसे वे अपनी इच्छानुसार खर्च कर सकते हैं। • करों के भुगतान और अन्य गैर-कर भुगतान के बाद उपलब्ध आय। **PDI = PI – निजी कर भुगतान– गैर-कर भुगतान**
राष्ट्रीय डिस्पोजेबल आय	• संस्थागत क्षेत्रों की सकल (या शुद्ध) प्रयोज्य आय का योग। **सकल (या शुद्ध) एनडीआई = सकल (या शुद्ध) राष्ट्रीय आय (बाजार कीमतों पर)- अनिवासी इकाइयों को देय वर्तमान स्थानान्तरण**

राष्ट्रीय आय की गणना करने के तरीके

आय विधि	• स्वरोजगार द्वारा सभी उत्पादन कारकों (किराया, वेतन, ब्याज, लाभ) और मिश्रित-आय को जोड़कर अनुमानित। • हम इस प्रक्रिया का उपयोग करके किसी दिए गए वर्ष में किसी देश के सभी नागरिकों द्वारा प्राप्त सभी शुद्ध आय भुगतान को जोड़ते हैं। • उत्पादन के सभी कारकों से होने वाली शुद्ध आय को जोड़ा जाता है। ○ उदाहरण: शुद्ध किराया, मजदूरी, ब्याज, और मुनाफा। • हस्तांतरण भुगतान के रूप में प्राप्त आय इसमें शामिल नहीं की जाती। **शुद्ध राष्ट्रीय आय = कर्मचारियों का मुआवजा + मिश्रित परिचालन अधिशेष (W +R +P +I) + शुद्ध आय + विदेश से शुद्ध कारक आय** **जहाँ**, ▪ **W** = Wages and salaries ▪ **R** = Rental Income ▪ **P** = Profit ▪ **I** = Mixed Income

उत्पाद/मूल्य वर्धित विधि	• एक वित्तीय वर्ष के दौरान किसी देश में बाजार कीमतों पर उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य।
	• जीएनपी की गणना करने के लिए,
	  ○ सभी उत्पादक गतिविधियों से डेटा एकत्र किया जाता है और विश्लेषण किया जाता है। इसमे निम्नलिखित शामिल हैं :
	    ▪ कृषि माल,

	▪ खनिज, और ▪ औद्योगिक उत्पादों ▪ परिवहन, बीमा, संचार, वकीलों, डॉक्टरों और शिक्षकों आदि द्वारा किए गए उत्पादन में योगदान। **राष्ट्रीय आय = जीएनपी - पूंजी की लागत - मूल्यह्रास - अप्रत्यक्ष कर**
व्यय विधि	• राष्ट्रीय आय को व्यय प्रवाह के रूप में मापा जाता है। • इसमें समाज द्वारा कुल व्यय का योग शामिल है : ○ निजी उपभोग व्यय, ○ शुद्ध घरेलू निवेश, ○ वस्तुओं और सेवाओं पर सरकारी खर्च, और ○ शुद्ध विदेशी निवेश। **राष्ट्रीय आय = राष्ट्रीय उत्पाद = राष्ट्रीय व्यय**

आर्थिक सांख्यिकी संबंधी स्थायी समिति

- **गठन:** सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MOSPI) द्वारा।
- **अध्यक्ष**: पूर्व मुख्य सांख्यिकीविद्
- **कार्य**
  - विश्लेषण और विकास : रोजगार, उद्योग और सेवाओं पर देश का सर्वेक्षण
  - डेटा स्रोतों, संकेतकों और परिभाषाओं के वर्तमान ढ़ांचे को देखना
    - औद्योगिक उत्पादन सूचकांक, समय-समय पर श्रम बल सर्वेक्षण, समय उपयोग सर्वेक्षण, आर्थिक जनगणना और असंगठित क्षेत्र के आंकड़ों के लिए।
  - 4 स्थायी समितियों श्रम बल सांख्यिकी, औद्योगिक सांख्यिकी, सेवा क्षेत्र, और अनिगमित क्षेत्र की फर्मों को SCES में समाहित किया जाएगा।
  - 108 अर्थशास्त्रियों और सामाजिक वैज्ञानिकों ने भारत में सांख्यिकीय आंकड़ों को प्रभावित करने में "राजनीतिक भागीदारी" पर चिंता व्यक्त की।
    - सांख्यिकीय संगठनों की "संस्थागत स्वतंत्रता" और अखंडता को बहाल करने की अपील की।

2 CHAPTER मुद्रास्फीति और व्यापार चक्र

- **मुद्रास्फीति:** सामान्य मूल्य स्तर में वृद्धि जो अनियमित है और पैसे की क्रय शक्ति में कमी के साथ है।
- कीमतों में वृद्धि, मांग में वृद्धि और आपूर्ति में कमी के कारण हो सकती है।

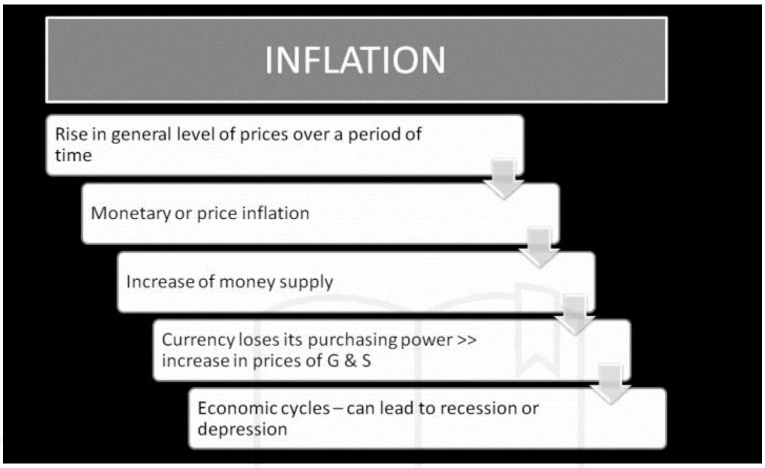

मुद्रास्फीति के कारण

मांग जनित कारक	लागत जनित कारक
• जनसंख्या में वृद्धि। • काला धन। • आय में वृद्धि। • अत्यधिक सरकारी खर्च।	• बुनियादी ढांचे की बाधाओं के कारण उत्पादन और वितरण लागत में वृद्धि होती है। • न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में वृद्धि। • अंतरराष्ट्रीय कीमतों में उछाल। • जमाखोरी और कालाबाजारी। • अप्रत्यक्ष करों में वृद्धि।

अन्य कारक

पैसे की अधिक छपाई	• जब सरकार किसी संकट से निपटने के लिए अतिरिक्त पैसे छापती है। • मूल्य स्तर में उस हद तक वृद्धि होती है जो मुद्रा अधिशेष से मेल खाती है। • इस प्रकार की मुद्रास्फीति को मांग-पुल मुद्रास्फीति कहा जाता है।
उत्पादन लागत में वृद्धि	• उत्पादन लागत में वृद्धि - मुद्रास्फीति का सामान्य और अक्सर कारण • अंतिम उत्पाद की कीमत में वृद्धि की ओर जाता है। • उदा.-यदि कच्चे माल की कीमत बढ़ती है तो उत्पादन की लागत भी बढ़ जाती है, जिससे कंपनी अपने मुनाफे को बनाए रखने के लिए कीमतों में वृद्धि करती है। • बढ़ती श्रम लागत: मुद्रास्फीति की ओर ले जाती है क्योंकि जब कंपनियां श्रमिकों की बढ़ी हुई मजदूरी की मांग को स्वीकार करती हैं। (कंपनियां आमतौर पर उन लागतों को अपने ग्राहकों पर पारित करने के लिए चुनती हैं)

अंतर्राष्ट्रीय ऋण और राष्ट्रीय ऋण	• अंतर्राष्ट्रीय ऋण और राष्ट्रीय ऋण भी मुद्रास्फीति को जन्म दे सकते हैं। • जब राष्ट्र ब्याज के साथ पैसा उधार लेते हैं, जो अंत में कीमतों में वृद्धि का कारण बनता है ताकि वे अपने कर्ज को बनाए रख सकें।
कर और शुल्क में वृद्धि	• मुद्रास्फीति सरकारी करों (उपभोक्ता उत्पादों, विशेष रूप से गैर-लोचदार उत्पादों के ईंधन पर) के कारण हो सकती है, करों में वृद्धि के कारण, आपूर्तिकर्ता अक्सर उपभोक्ता पर बोझ डालते हैं।
युद्ध और संघर्ष	• मुद्रास्फीति का कारण बनता है क्योंकि सरकारों को खर्च किए गए धन की भरपाई करने और केंद्रीय बैंक से उधार ली गई धनराशि को चुकाने की आवश्यकता होती है। • उत्पाद की मांग के लिए श्रम लागत के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रभावित करता है

मुद्रास्फीति के प्रकार

कार्य-कारण के आधार पर	गति के आधार पर	अन्य
• मुद्रास्फीति की मांग • मूल्य - बढ़ोत्तरी मुद्रास्फ़ीति • मौद्रिक मुद्रास्फीति • अंतर्निहित मुद्रास्फीति • हेडलाइन/कोर मुद्रास्फीति • लाभ प्रेरित मुद्रास्फीति • संरचनात्मक मुद्रास्फीति	• रेंगती हुई मुद्रास्फीति • चलती मुद्रास्फीति • वोकिंग मुद्रास्फीति • गेलोपिंग मुद्रास्फीति	• तिरछापन • मुद्रास्फीतिजनित मंदी

मुद्रास्फीति की मांग	• सकल मांग मुख्य रूप से बढ़े हुए सरकारी खर्च (विस्तारकारी राजकोषीय नीति) या घरों और व्यवसायों द्वारा खर्च में वृद्धि के परिणामस्वरूप बढ़ती है। • सकल मांग > समग्र आपूर्ति मांग खींचने वाली मुद्रास्फीति का मूल स्रोत है। • अर्थव्यवस्था के उद्यम उन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने में असमर्थ हैं जिनकी घरों को वर्तमान समय में आवश्यकता होती है। • बढ़ती मांग के कारण वस्तुओं और सेवाओं की कमी के कारण मुद्रास्फीति बढ़ रही है।
मूल्य - बढ़ोत्तरी मुद्रास्फ़ीति	• श्रम, कच्चे माल और अन्य आदानों की लागत में वृद्धि • उत्पादन के कारकों की कीमत बढ़ जाती है, जिसके परिणामस्वरूप इन वस्तुओं की आपूर्ति में गिरावट आती है। • लागत जनित मुद्रास्फीति: इसमे मांग स्थिर रहती है, कमोडिटी की कीमतें बढ़ती हैं, जिसके परिणामस्वरूप समग्र मूल्य स्तर में वृद्धि होती है।
संरचनात्मक मुद्रास्फीति (अड़चन मुद्रास्फीति)	• कम कृषि उत्पादन जैसे अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक दोषों के कारण मुद्रास्फीति अधिक समय तक चलती है। • अपर्याप्त वितरण और भंडारण प्रणालियों के परिणामस्वरूप भोजन की कमी और मुद्रास्फीति होती है।
रेंगती मुद्रास्फीति (1-4%)	• समय के साथ, किसी देश की मुद्रास्फीति दर धीरे-धीरे लेकिन स्थिर रूप से बढ़ती है। • लंबी अवधि को देखते हुए, रेंगती मुद्रास्फीति का तुलनात्मक रूप से मामूली प्रभाव जीवन यापन की लागत में एक बड़ी वृद्धि को जोड़ता है।

वॉकिंग मुद्रास्फीति (2-10%)	• ट्रोलिंग मंहगाई इसका दूसरा नाम है। • यह तब होता है जब मूल्य वृद्धि की दर रेंगने वाली मुद्रास्फीति से अधिक हो जाती है, जो 2% से 10% तक होती है।
रनिंग मुद्रास्फीति (10-20%)	• जब सालाना 10% से 20% के बीच की सामान्य दर के साथ मुद्रास्फीति में बड़ी वृद्धि होती है।
मौद्रिक मुद्रास्फीति	• RBI द्वारा अधिक धन जारी करने (घाटे के वित्तपोषण) के कारण मुद्रास्फीति। • किसी देश की मुद्रा आपूर्ति में निरंतर वृद्धि को मौद्रिक मुद्रास्फीति (या मुद्रा क्षेत्र) के रूप में जाना जाता है।
सरपट दौड़ती या अति-मुद्रास्फीति (20% - 1000%)	• 'अत्यधिक उच्च मुद्रास्फीति' को दोहरे अंकों या तिहरे अंकों में मापा जाता है (अर्थात, एक वर्ष में 20%, 100% या 200%) • लाखों या शायद खरबों डॉलर में वार्षिक दरों के साथ "बड़े और त्वरित" के रूप में वर्णित। • इस तरह की मुद्रास्फीति में वृद्धि की सीमा बहुत बड़ी है। (वृद्धि भी अपेक्षाकृत कम समय में होती है, कीमतों में रातोंरात वृद्धि होती है)
मुद्रास्फीतिजनित मंदी	• ऐसी स्थिति जिसमें मुद्रास्फीति बढ़ रही है, आर्थिक विकास धीमा हो रहा है, और बेरोजगारी लगातार अधिक है। • नीति निर्माताओं के लिए एक पहेली पैदा करता है, क्योंकि मुद्रास्फीति को कम करने के उद्देश्य से किए गए प्रयास बेरोजगारी को बढ़ा सकते हैं। • तब होता है जब एक ही समय में ठहराव (कोई आर्थिक विकास नहीं) और मुद्रास्फीति दोनों होते हैं। • उच्च कीमतों और बेरोजगारी के साथ अर्थव्यवस्था धीमी हो रही है। • बेरोजगारी अधिक है, और मांग सुस्त है। • ऐसा तब होता है जब किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन धीमा हो जाता है या बढ़ना बंद हो जाता है।
तिरछापन	• यह तब होता है जब कुछ वस्तुएं मुद्रास्फीति का अनुभव करती हैं जबकि अन्य अपस्फीति का अनुभव करती हैं। • उदाहरण: संपत्ति की कीमतों में गिरावट के साथ ही लागत (मुद्रास्फीति) में वृद्धि, जैसे संपत्ति एक उदाहरण अपस्फीति है

मुख्य मुद्रास्फीति बनाम शीर्षक मुद्रास्फीति

कोर मुद्रास्फीति	हेडलाइन मुद्रास्फीति
• खाद्य और ऊर्जा क्षेत्रों को छोड़कर वस्तुओं और सेवाओं की लागत में परिवर्तन। • इन मदों को मुद्रास्फीति के हमारे अनुमान में शामिल नहीं किया गया है क्योंकि इनकी कीमतें काफी अधिक अप्रत्याशित हैं। • उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI): इसकी गणना के लिए सबसे अधिक उपयोग किया जाता है। • लंबी अवधि के मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति का उपाय।	• लंबी अवधि के मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति का उपाय। • खाद्य और ऊर्जा की कीमतें (जैसे, तेल और गैस), जो कहीं अधिक अस्थिर हैं और मुद्रास्फीति के बढ़ने की संभावना है - कुल मुद्रास्फीति के इस अनुमान में शामिल हैं। • सेक्टर-विशिष्ट मुद्रास्फीति की वृद्धि को सहन करने की संभावना नहीं है। • हो सकता है कि हेडलाइन मुद्रास्फीति किसी अर्थव्यवस्था की मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति को सटीक रूप से प्रतिबिंबित न करे। • RAW मुद्रास्फीति का चित्र।

मुद्रास्फीति की जांच के उपाय

- **उपकरण:** WPI (थोक मूल्य सूचकांक) और CPI (उपभोक्ता मूल्य सूचकांक)
    - थोक और खुदरा मूल्य में उतार-चढ़ाव का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है।
- CPI उन वस्तुओं और सेवाओं की कीमत में अंतर का अनुमान लगाता है जो भारतीय उपभोक्ता उपयोग के लिए खरीदते हैं।
- जैसे: भोजन, चिकित्सा देखभाल, शिक्षा, गैजेट्स।
- WPI: छोटे व्यवसायों को पुनर्विक्रय के लिए उद्यमों द्वारा दी जाने वाली वस्तुओं या सेवाओं को कैप्चर करता है।
- WPI और CPI : दोनों भारत में मुद्रास्फीति की गणना करते थे।

WPI बनाम CPI

थोक मूल्य सूचकांक (WPI)	• आधार वर्ष : 2011-12 • थोक बिक्री के लिए वस्तुओं के खुदरा स्तर पर पहुंचने से पहले उनके मूल्य में औसत परिवर्तन को मापा जाता है। • मुद्रास्फीति संकेतक जो सबसे अधिक बार उपयोग किया जाता है। • केवल सामान कवर करता है। • विनिर्मित उत्पाद(64%) > प्राथमिक वस्तुएं(23%) > ईंधन और बिजली(13%)। • आर्थिक सलाहकार कार्यालय (OEA), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रकाशित।

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक(CPI)	• आधार वर्ष : 2011-12
	• आधार वर्ष के संदर्भ में वस्तुओं और सेवाओं के खुदरा मूल्य में परिवर्तन की गणना करता है।
	• CPI (संयुक्त: ग्रामीण + शहरी) आरबीआई का प्रमुख मुद्रास्फीति संकेतक है।
	• वस्तुएँ और सेवाएं दोनों शामिल हैं
	  ○ भोजन और पेय 45.86%
	  ○ विविध 28.32%
	  ○ आवास 10.07%
	  ○ ईंधन और प्रकाश 6.84%
	  ○ कपड़े और जूते 6.53%
	  ○ पान, तंबाकू और नशीला पदार्थ 2.38%
	• औद्योगिक श्रमिकों के लिए CPI (IW): श्रम और रोजगार मंत्रालय ने 2001 से 2016 तक CPI (IW) के लिए आधार वर्ष को संशोधित किया है।
	• कृषि मजदूर (AL): श्रम और रोजगार मंत्रालय के ग्रामीण मजदूर (RL) के लिए CPI
	• 1986-87: कृषि श्रमिकों (CPI-AL) और ग्रामीण श्रमिकों (CPI-RL) के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के लिए आधार वर्ष।
	• CPI (ग्रामीण/शहरी/संयुक्त) : राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO), सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय।

उत्पादक मूल्य सूचकांक (PPI)

- वस्तुओं और सेवाओं दोनों की कीमतों में औसत परिवर्तन को मापकर एक उत्पादक द्वारा प्राप्त औसत कीमतों में परिवर्तन को निर्धारित करता है।
    - या तो जब वे उत्पादन के स्थान (आउटपुट PPI) को छोड़ते हैं या जैसे ही वे इनपुट उत्पादन प्रक्रिया (इनपुट PPI) में प्रवेश करते हैं।
- WPI सेवाओं को कवर नहीं करता है,जबकि PPI करता है (इसे अधिक समावेशी सूचकांक देते हुए)
- थोक मूल्य सूचकांक में बहु गणना पूर्वाग्रह को पीपीआई द्वारा समाप्त कर दिया जाता है।
- PPI में मदों के भार की गणना आपूर्ति उपयोग तालिकाओं का उपयोग करके की जाती है।
- प्राथमिक और मध्यवर्ती चरणों में मूल्य परिवर्तन को तैयार अच्छे चरण में बनाए जाने से पहले ट्रैक किया जा सकता है, PPI को मुद्रास्फीति का एक बेहतर उपाय माना जाता है।
- कई देशों द्वारा PPI मुख्य सूचकांक के रूप में अपनाया गया है।

आवास मूल्य सूचकांक

- त्रैमासिक आधार पर भारत के शहरों में आवासीय भवनों की कीमत में बदलाव को ट्रैक करता है।
- **NHB Residex :** भारत का पहला आधिकारिक आवास मूल्य सूचकांक जिसे जुलाई 2007 में मुंबई में एक राष्ट्रीय आवास बैंक के रूप में बनाया गया। (वित्त मंत्रालय)
- एक तकनीकी सलाहकार समिति की मदद से विकसित किया गया जिसमें शामिल हैं -
    - आवास बाजार के हितधारक,
    - सरकारी प्रतिनिधि (आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय),
    - भारतीय रिजर्व बैंक
    - राष्ट्रीय आवास बैंक
- भारत के रियल एस्टेट बाजार में खुलापन बढ़ाने और विश्वास पैदा करने का प्रयास करता है।

सेवा मूल्य सूचकांक (SPI)

- व्यापार-चक्र संकेतक जो सेवाओं के व्यापारिक मूल्य में सकल परिवर्तन को मापता है।
- जैसे कि :
    - माल और यात्री परिवहन,
    - डाक सेवाएं,
    - आवास और भोजन सेवाएं,
    - सूचना और संचार सेवाएं,
    - कंप्यूटर प्रोग्रामिंग,
    - परामर्शदात्री सेवाएं,
    - कानूनी और लेखा सेवाएं,
    - वास्तुकला और इंजीनियरिंग,
    - विज्ञापन,
    - दफ़्तर सपोर्ट,
    - सुरक्षा सेवाएं, आदि।
- सार्वजनिक सेवाएं शामिल नहीं हैं, (जैसे स्वास्थ्य और शिक्षा) जो सरकार द्वारा प्रदान की जाती हैं।

मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण

अर्थ	• एक केंद्रीय बैंकिंग नीति जो एक निर्धारित वार्षिक मुद्रास्फीति दर प्राप्त करने के लिए मौद्रिक नीति के प्रबंधन पर केंद्रित है। • मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण मौद्रिक नीति तय करने में अधिक स्थिरता, पूर्वानुमान और पारदर्शिता लाने के लिए जाना जाता है।
सख्त मुद्रास्फीति लक्ष्य	• जब केंद्रीय बैंक की एकमात्र प्राथमिकता मुद्रास्फीति के लक्ष्यों को नजदीक से रोकना हो।
लचीली मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण	• इसका उपयोग तब किया जाता है जब केंद्रीय बैंक कई अन्य कारकों के बारे में चिंतित होता है। • जैसे: ब्याज दर, विनिमय दर, उत्पादन, रोजगार स्थिरता आदि।

मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण ढांचा

- स्थापित: 2016 में RBI अधिनियम, 1934 में संशोधन के बाद
- भारत में अब एक लचीली मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण ढांचा है।
- संशोधित RBI अधिनियम अनिवार्य करता है कि भारत सरकार, रिजर्व बैंक के सहयोग से, हर पांच साल में एक बार मुद्रास्फीति लक्ष्य निर्धारित करती है।

सकल घरेलू उत्पाद अपस्फीतिकारक/जीडीपी डिफ्लेटर

$$\text{GDP deflator} = \frac{\text{Nominal GDP}}{\text{Real GDP}} \times 100$$

- जीडीपी डिफ्लेटर: सामान्य मूल्य मुद्रास्फीति का एक उपाय।
- वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद के लिए नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद का अनुपात
- उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं को शामिल करता है
- यदि जीडीपी अपस्फीतिकारक 1 है तो सामान्य मूल्य स्तरों में कोई परिवर्तन अपेक्षित नहीं है।
- यदि जीडीपी डिफ्लेटर 1 से अधिक है तो यह इंगित करता है कि सामान्य मूल्य स्तर बढ़ रहा है।
- यह CPI और WPI की तुलना में अधिक व्यापक है, और इसकी गणना कई प्राथमिक मूल्य सूचकांकों का उपयोग करके की जाती है।
- इसका उपयोग मौजूदा कीमतों पर मूल्यांकन किए गए सकल घरेलू उत्पाद के विभिन्न घटकों को कम करके मात्रा अनुमान प्राप्त करने के लिए किया जाता है। (या तो उत्पादन या मांग पक्ष अनुमानों से)

आधार प्रभाव (Base Effect)

- पिछले वर्ष के मूल्य स्तरों में वृद्धि (अर्थात पिछले वर्ष की मुद्रास्फीति) का चालू वर्ष पर प्रभाव।
- मूल्य स्तरों में तुलनीय वृद्धि। (यानी वर्तमान मुद्रास्फीति)
- मुद्रास्फीति पर पिछले वर्ष के आधार का प्रभाव दिखाई देता है।
- यदि पिछले वर्ष आर्थिक मंदी की स्थिति थी तो अगले वर्ष मुद्रास्फीति की उच्च दर दिखाई देती है और यदि पिछले वर्ष मुद्रास्फीति दर अधिक रही है तो अगले वर्ष मुद्रास्फीति की दर कम दिखती है।

मुद्रास्फीति के प्रभाव

गुण	अवगुण
• मुद्रा मूल्यह्रास • मुद्रा के कमजोर होने से सबसे ज्यादा निर्यात को फायदा होता है। • ब्याज दर कम करता है। • देनदारों को लाभ होता है। • व्यवसायी लोगों को लाभ होता है। • अल्पावधि में बचत, निवेश और रोजगार सभी में वृद्धि होती है। • नाममात्र की मजदूरी बढ़ जाती है।	• रुपये की क्रय शक्ति कम हो जाती है। • मुद्रा के मूल्यह्रास के परिणामस्वरूप आयात को नुकसान होता है, क्योंकि वे अधिक महंगे हो जाते हैं। • निश्चित आय वाले लोग, जैसे पेंशनभोगी और वेतनभोगी कर्मचारी, पीड़ित होते हैं। ○ आर्थिक अनिश्चितता के कारण निवेश कम है। • वास्तविक मजदूरी में कमी। • बचत के वास्तविक मूल्य में कमी। • प्रतिस्पर्धा में कमी।

अन्य महत्वपूर्ण शर्तें

अपस्फीति	• यह समय के साथ मूल्य स्तर में सामान्य कमी है।
विस्फीति	• यह मुद्रास्फीति की दर में कमी या धीमी मुद्रास्फीति को संदर्भित करता है। • उदाहरण के लिए मान लीजिए कि मुद्रास्फीति की दर 8% से गिरकर 6% हो गई है।
रिफ्लेशन	• मुद्रा आपूर्ति को बढ़ाकर या करों को कम करके अर्थव्यवस्था को उत्तेजित करने का कार्य रिफ्लेशन है। (व्यापार चक्र में गिरावट के बाद) • अर्थव्यवस्था को दीर्घकालिक प्रवृत्ति में वापस लाने के लिए। • यह अपस्फीति के विपरीत है।
फिलिप्स वक्र	• बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के बीच विपरीत संबंध। 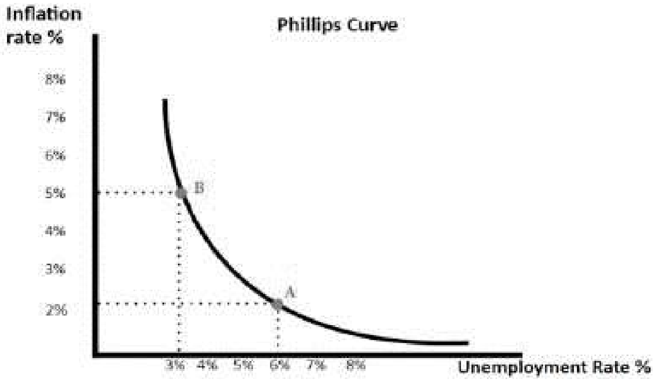
उत्पादक मूल्य सूचकांक(PPI)	• वस्तुओं और सेवाओं की कीमत में औसत परिवर्तन की निगरानी करता है क्योंकि वे ○ विनिर्माण सुविधा (आउटपुट PPI) को छोड़कर वे निर्माण प्रक्रिया (इनपुट PPI) में प्रवेश करते हैं। • यह एक निर्माता द्वारा प्राप्त औसत कीमतों में परिवर्तन की गणना करता है।
सकल मांग (AD)	• एक निश्चित स्तर पर और एक निश्चित समय अवधि में अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों द्वारा सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं की नियोजित खरीद का कुल मूल्य। • कुल व्यय के रूप में मापा जाता है।

	AD = C+I+G+(X-M) जहाँ , C = उपभोग व्यय I = निवेश व्यय G = सरकारी व्यय (X-M) = शुद्ध निर्यात
सकल आपूर्ति(AS)	• सभी उत्पादक इकाइयों द्वारा एक निश्चित अवधि में अर्थव्यवस्था में सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के नियोजित उत्पादन का कुल मूल्य। • कुल आपूर्ति का मौद्रिक मूल्य = राष्ट्रीय आय। AS = राष्ट्रीय आय • जब AD>AS पूर्ण रोजगार स्तर पर = अधिक मांग। • जब AD<AS पूर्ण रोजगार स्तर पर = घाटे की मांग।
मुद्रास्फीति अंतराल	• जब कुल मांग पूर्ण रोजगार पर कुल आपूर्ति से अधिक हो जाती है, तो मुद्रास्फीति की खाई उत्पन्न होती है। • ऐसे में अत्यधिक मांग से महंगाई बढ़ेगी। 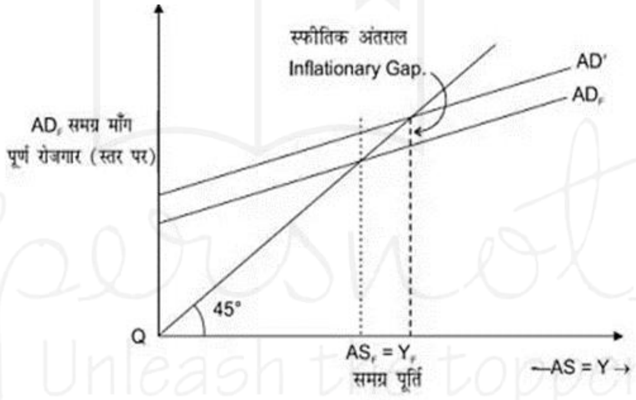
अपस्फीति अंतराल	• वह राशि जिससे वास्तविक सकल मांग पूर्ण रोजगार पर कुल आपूर्ति से कम हो जाती है। • कुल मांग घाटे के परिमाण का एक उपाय। • उत्पादन,आय और रोजगार में गिरावट के साथ-साथ कीमतों में दीर्घकालिक गिरावट का परिणाम है। 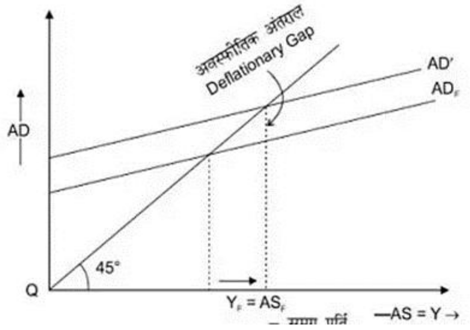
मुद्रास्फीति कर	• SEIGNIORAGE इसका दूसरा नाम है। • मुद्रास्फीति हमेशा वह राशि होती है जिस पर सरकार घाटे का वित्तपोषण कर सकती है। • मुद्रास्फीति का घाटा वित्त के स्तर से सीधा संबंध है। • यह नकद और निश्चित दर बांड धारकों के साथ-साथ निश्चित आय वाले निवेशकों द्वारा अनुभव किए गए मूल्य के वित्तीय नुकसान को संदर्भित करता है।